"अनुभूतियों के आयाम"

कमल गुप्ता

राज प्रकाशन

अनुभूतियो के आयाम (काव्य)

प्रथम सस्करण 1998

मूल्य 150 रुपए

प्रकाशक
राज प्रकाशन
एम पी ए 53 महावीर नगर द्वितीय
कोटा 324005

राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर
के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

आवरण

मुद्रक
रोहित ऑफसेट प्रा लि
99 पोलोग्राउण्ड इन्दौर
फोन 422201 2

टाइप सेटिंग
आर वी कम्पोजर एण्ड सेटर
52 तिलकपथ रामबाग चौराहा इन्दौर

समर्पण

प्रश्नाकुल एकाग्रता
आदीप्त भावावस्था,
शब्दो की विपुलता
अर्थों की काया
सृजक की आतरिकता
चिरतन द्वदो की
आतुर अभिव्यक्ति से
प्रस्फुटित यह सग्रह
समर्पित है
उन सभी को
जिनकी प्रेरणा के प्रकाश मे
अनुभूतियो के इन आयामो क
मैं स्पर्श कर सका ।

अनुभूतियो के आयाम

स्वप्नाविष्ट सा
अनुभूतियो के
अदभुत जगत मे
प्रविष्ट होता हूँ।
स्वचालित
मत्राविष्ट सा
विविध आयामो का
स्पर्श करता हूँ।
आन्तरिकता की
सच्चाई के सानिध्य मे,
अनुभूतियो मे
जीती है पूर्ण सृष्टि ।
अज्ञेय अव्याख्येय है
अनुभूतियो का जगत
मन्दिरो सा मौन
अन्त स का प्रतिविम्ब है
अनुभूतियो का प्रत्येक आयाम ।
अभिन्न रहती हैं
परछाइयो की भाँति
सतुलित सौन्दर्यपरक वोध मे
चेतना के रूप मे
आठो याम ।
काव्यरूप मे शब्दवद्ध है
इन्ही अनुभूतियो के आयाम ।

नई कविता का अनुपम सकलन...

जीवनानुभवो से चित्त मे सस्कार रूप मे समाहित हो जाने वाली सवेदनाएँ ही धनीभूत हो काव्य रूप मे अभिव्यक्त होती हैं। यह चितस्थ सस्कार ही स्व से पल्लवित एव पुष्पित होने वाली अनुभूतियाँ हैं जो सृजन के रूप मे अभिव्यक्त होती हैं आदर्श सस्कृति का निर्माण करती हैं। जीवनानुभव निजी होकर भी सामाजिक सवृद्धि के निमित्त ही होते हैं इसीलिए अनुभूतियाँ निजी होते हुए भी सार्वजनिक होती हैं। सार्वजनिक को आप अव्यक्त नही रख सकते और अनुभूतियो के व्यक्तिकरण मे लोकहित निहित होता है। वैसे तात्विक दृष्टि से अभिव्यक्ति की मीमासा करना निरर्थक ही है सामाजिक दृष्टि से ग्रहणीय पक्ष अनुभूति ही है और 'काव्य रूप मे शब्दबद्ध हैं इन्ही अनुभूतियो' के आयाम ।

भाव आन्तरिक हैं अभिव्यक्ति बाह्य। आन्तरिक चेतना काव्य की आत्मा है कवि के चित्ताकाश पर सवेदना उत्रप्त घन बन बरसती है। सामाजिक सघर्ष का अश या उसके सहृदय प्रत्यक्ष दृष्टा अपनी अनुभूति को जागतिक सव्यवहारो से पुष्ट व सवर्धित करते रहते हैं। अनुभूति जड़ वस्तु नही स्व की सचेतन इकाई है जो अनुभवो से निरन्तर पुष्ट होती रहती है। श्री कमल गुप्ता ने स्व से घनिष्ठरूपेण आवद्ध इन्ही जीवनानुभवो को अभिव्यक्ति दी है।

प्रस्तुत सग्रह के काव्य से स्पष्टत परिलक्षित होता है कि कवि शब्द से अत्याधिक प्रेम करता है सृजन मे ईश्वर का शोध करता है और प्रकृतिप्रियता उसे मुक्ति तक ले जाती है। कवि स्वप्न से खेलते हुए यथार्थ को आत्मसात कर आत्मरहस्य का शोधार्थी हो जाता है। एकात मे काव्योदगम तक पहुँचने का आकाक्षी कवि यथार्थ के धरातल पर मनुष्य के पतन से चितित है किन्तु इस चिता मे भी कवि की आस्था का प्रकाश प्रभावित करता है

क्या मनुष्य का चट्टानी हृदय भेद
कोई ममत्व व कारूण्य का स्रोत
कभी नही फूटेगा ? (इतिहास)

कवि की तीक्ष्ण प्रश्नाकुलता अन्तस मे एक स्पदन जागृत करती है। कवि द्वारा इस प्रश्नाकुलता के समाधान की तलाश एक सुखद अनुभूति का बायस है। स्वप्नो को वास्तविकता के निकट रखने का समाधान सुझाते हुए कवि इस अस्थायी जगत मे प्रेम व प्रकृति को ही स्थायी मानता है। प्रकृति एव श्रम मे अपनी आस्था

व्यक्त करते हुए वे लिखते हैं

'सुखो की तरह फैले /
हरे पीले खेतो मे /
स्पष्टत परिलक्षित है /
कृषको का श्रम /
और धरा की उदारता / (खेत)

स्मृतियो के द्वार से कवि अतीत मे प्रविष्ट होता है किन्तु समय के पखो एव अतीत की शर्तो को सहज भाव से स्वीकार्य कर लेता है । एकात का आनन्द लेने मे कवि कविताओ की पुरानी डायरी की अनुभूतियो मे खो जाता है । सौन्दर्य और अनुभूतियाँ शीर्षक खण्ड मे कवि प्रकृति और समय के साथ शब्द सृजन मे रमा है वही सघर्ष और अन्तर्द्वद्व खण्ड मे वह जीवन एव यथार्थ के समीप है । इस खण्ड मे यथार्थ की कटुता के मध्य कवि का आस्थावान चरित्र उजागर होता है

एक दिन उगेगा वह सूर्य /
जो हर आँख मे सच की रोशनी भर देगा /
आस्था ही सपनो को यथार्थ बनाती है /
हृदय को आस्था के रगो से भर दो / (सपना)

क्राति लोकतत्र व्यवस्था का सड़ापन आदि काव्य रचनाओ मे कवि ने वर्तमान राजनीति व्यवस्था की विकृतियो का उल्लेख करते हुए इनकी समाप्ति की सम्भाव्यता की आस्था व्यक्त की है । जहाँ इन दोनो खण्डो मे कमल आस्था के यथार्थवादी कवि के रूप मे उभरते हैं वही सग्रह का तृतीय खण्ड तलाशता हूँ तुम्हे' मे कवि परम सत्य की अनन्त तलाश मे रत हैं ।

अदृश्य की खोज मे व्याकुल कवि अनन्त तलाश मे लीन हो जाता हैं । उसे विश्वास है कि परम सत्य को एकान्त मे ही खोजा जा सकता है कवि की इस तलाश मे पाठक एकान्त अधेरे अन्त स के प्रकाश प्रेम सत्य प्रकृति और पीड़ा की दीर्घ यात्रा करते हुए आनन्दानुभूति के बिन्दु तक पहुँच जाता है । प्रेमानुभूति मे लीन होकर ही उस परम सत्य को पाया जा सकता है इस सग्रह का यह निष्कर्षात्मक वाक्य हो सकता है ।

समूचा सग्रह नई कविता का अनुपम उदाहरण है जिसमे बौद्धिक भाव सौन्दर्य सास्कृतिक अनुभूतियाँ तथा समकालीन नई कविता का शिल्प अपनी अनुपम छटा के साथ आधान्त अभिव्यक्त है । नई कविता का शिल्प व्याख्यात्मक निबन्ध शैली का शिल्प है । कई स्तरा पर उत्तर वस्तु के विश्लेषण का साहित्यिक

प्रयास किया जाता है । श्री कमल गुप्ता के शिल्प की प्रौढ़ता तथा भाव की उदात्त प्राजलता देखने को मिलती है । व्याख्या मे तुलनात्मक एव उपमात्मक सौन्दर्यबोध अनुभूति को चमत्कृत वना देता है । एक दृष्टान्त

शब्द पुल हैं / जो जोड़ते हैं / मनुष्य को मनुष्य से /
शब्द नही होते / तो मनुष्य आदिम रह गया होता /
शब्द बुनते हैं काव्य / शब्द कभी भी असमर्थ नही होते /

(शब्द जादू हैं)

कई कविताओ से काव्यात्मक लयात्मकता के प्रेयस पक्ष को पृथक कर देने पर वे समृद्ध गद्य के अच्छे उदारहण वन सकती हैं । कवि का यह प्रथम प्रयास अपनी लय के कारण आज के किसी श्रेष्ठ काव्य से कम नही है । इन रचनाओ को पढ़ कोई भी कह सकता है कि श्री कमल गुप्ता विपुल सम्भावनाओ के कवि हैं । उनम नई कविता के विचार तत्व को आत्मस्थ करने और अनुभूति के साथ सृजन धर्म को शिल्प सौष्ठव के साथ निर्वाहित करने की अदभुत क्षमता है ।

नई कविता मे अलकार नियोजित नहीं होते वे अभिव्यक्ति से सहजता से जुड़े होते हैं । विम्ब उभरते हैं प्रतीको का भी उपयोग होता है मिथक भी प्रयुक्त किए जाते हैं लेकिन सब अनायास सहज रूप मे । मैं इसे सहज कविता तो नही कहता परन्तु ऐसी रचनाएँ अनेक कोणो से एक ही विचार को विस्तार देती हैं । श्री कमल गुप्ता इस प्रयास म भी पूर्णत सफल रहे हैं । उनमे कल्पना की उड़ान है प्रतिभा का चमत्कार प्रदर्शन है तथा वस्तु की व्याख्यात्मक समझ है । प्रयुक्त उपमाओ की सटीकता एव मौलिकता उनके चितन की गहनता व ज्ञान की विशालता को प्रकट करती है ।

मैं विश्वास करता हूँ सुधी पाठक इस नये कवि को सराहेगे तथा प्रेरणादायी प्रोत्साहन देगे । अकादमी ने इस सग्रह को प्रकाशन सहयोग देकर ही यह प्रमाणित किया है कि सग्रह की सभी रचनाएँ स्तरीय हैं । इनका रचाव मन मोहता है पढ़ने को विवश करता है । मैं हृदय से इस सग्रह तथा कवि की प्रशसा करता हूँ तथा कामना करता हूँ वे अपने पद साहित्यिक भूमि पर दृढ़ता से जमाएँगे ।

❑ **डॉ दयाकृष्ण विजयवर्गीय विजय**
अध्यक्ष अखिल भारतीय साहित्य परिषद

विजय भवन
सिविल लाइन्स कोटा
दूरभाष 324677

प्राक्कथन

कविता क्या है ? चोरी की अनुभूतियाँ   प्रेम प्रकृति सौन्दर्य अर्न्तद्वद्व क्या है जो पूर्व मे नही कहा जा चुका है । समस्त अनुभूतियाँ पुरातन हैं शाश्वत हैं जिन पर बारम्बार काव्य रचना होती रही है उन्ही अनुभूतियो को शब्दो म ढालकर पुन दोहराना क्या मात्र कोरा शाब्दिक अभ्यास है ? नि सन्देह ऐसा नही है । देश एव काल के अनुरूप सृजन के स्वरूप मे परिवर्तन अवश्य होते हैं । अनुभूतियॉ सृजन का मूल आधार है किन्तु अनुभूतियो की सार्वजनिकता को खारिज नही किया जा सकता और इसी कारण अनुभूतियो के बारम्बार प्रस्तुतिकरण होते रहते हैं । हाँ यह अलग बात है कि श्रेष्ठ प्रस्तुतीकरण ही इतिहास मे उपस्थिति दर्ज करा पाते हैं ।

काव्य को प्राय अन्त प्रेरणा या स्वत स्फूर्त प्रवृत्ति के रूप मे परिभाषित किया जाता है । काव्य एकात मे अनुभूतियो से अन्त स के प्रकाशित होने पर प्रस्फुटित होता है किन्तु इस प्रक्रिया की आयोजना की पृष्ठभूमि तो जीवन के अनुभवो एव सवेदनो द्वारा पूर्व मे ही तैयार हो चुकी होती है । कवि किसी अदभुत अलौकिक लोक का निवासी नही होता और काव्य प्रस्फुटन किसी रहस्यात्मक विधि द्वारा भी नही होता । काव्य के लिए भी उसी प्रकार की अन्त व बाह्य प्रेरणा की आवश्यकता होती है जो गद्य रचना के लिए आवश्यक है ।

कोई नही जानता कि अनुभूतियो का आगमन किस अतरिक्ष से होता है और यह कहॉ विलीन हो जाती है । जहाँ तक प्रश्न काव्य प्रेरणा का है इसके लिए अनुभूतियॉ या सवेदनाएँ अनिवार्य आवश्यकता है किन्तु प्रत्येक अनुभूति के पश्च मे कोई न कोई बाह्य प्रेरणा अवश्य ही अन्तर्निहित होती है । अनुभूति का प्राबल्य सुनिश्चित लयबद्धता एव सामाजिक प्रतिबद्धता के प्रवाह मे काव्य का रूप धारण कर लेता है । लयबद्धता या माधुर्य काव्य की अनिवार्य आवश्यकताओ मे से है इसे ही सहज काव्यात्मक गति भी कहा जा सकता है । अतुकात काव्य को यही सहज काव्यात्मक गति काव्य का रूप देती है ।

जहॉ तक सामाजिक सरोकार का प्रश्न है । प्रत्येक सृजनात्मक गतिविधि क पश्च मे सामाजिक सरोकारो का उद्देश्य तो होता ही है । सृजन के उद्देश्य के बिन्दु पर स्वान्त सुखाय की धारणा भी प्राय सामने आती है किन्तु क्या सामाजिक सरोकारो के उद्देश्यो से रहित सृजन सभव है ? यह सहज सभाव्य है कि कलाकार

स्वय को कला के साथ इतना आत्मसात् कर ले कि उसे कला के अभाव मे जीवन व्यर्थ प्रतीत हो या उसे सृजन के अभाव मे जीवन दुष्कर प्रतीत हो इस स्थिति मे या इस स्थिति के समीप लेखक या कलाकार को कला का उद्देश्य स्वान्त सुखाय प्रतीत होता है। किन्तु क्या यह प्रतीति आभासी नही है ? क्योंकि कला या सृजन की परिणति तो उसका रसिको तक पहुँचना ही है और जब सृजन लोगो तक पहुँचेगा तो निश्चय ही वे उससे प्रभावित भी होगे।

सम्पर्क मे आने वाली प्रत्येक धारणा या विचार से थोडा या अधिक प्रभावित होना सहज मानवीय प्रवृत्ति है और जब स्थायी अथवा अस्थायीरूपेण यह प्रभाव घटित होना ही है तो इसके विषय मे पूर्व म सचेत रहना सामाजिक दृष्टि से उपयोगी है और इसी कारण से लेखकीय दायित्व हो जाता है कि वह सामाजिक सरोकारो पर भी दृष्टि रखे और उन्हे सृजन मे स्थान दे। 1986 मे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करते समय निर्मल वर्मा ने अपने वक्तव्य मे कहा था कि कोई भी कलाकृति वह चाहे कितनी ही सुदूर कल्पना की फन्तासी क्यो न जान पडे हमेशा एक ऐसे यथार्थ बोध पर टिकी होती है जो हमारे चारो ओर फैली दुनिया को परिवर्तित और परिभाषित करती है हम उसे कुछ नए ढग ताजी निगाह से देखने लगते है।

जहाँ तक काव्य प्रयोजन की बात है यह स्पष्ट है काव्य व्यापक सामाजिक परिवर्तन मे भले ही सक्षम् न हो पर वह मनुष्य को और उत्तम मनुष्य बनाने की क्षमता रखता है। फिराक गोरखपुरी के शब्दो मे काव्य का प्रयोजन कर्म की प्रेरणा तथा उत्तेजना नही है अपितु कर्म की सौन्दर्यपरक एव जीवत अनुभूति कराना है। काव्य खडित व्यक्तित्व को सामजस्य प्रदान करता हैं।

काव्य जीवन की बाह्य समस्याओ का हल नही है किन्तु वह आन्तरिक कुण्ठाओ का हल अवश्य है। जीवन की केन्द्रीय समस्याओ एव प्रभावो का बहुत बडा हिस्सा कवि के स्वर मे हल होता प्रतीत होता है। सग्रह के अन्तर्द्वद्व वाले खण्ड मे इस बात को दखा जा सकता है।

निबन्ध लेखन मेरी रूचि का क्षेत्र रहा है और इस क्षेत्र मे ईश्वरीय अनुकम्पा से पर्याप्त से अधिक प्रतिफल मुझे प्रतिष्ठा व पुरस्कारो के रूप मे प्राप्त होता रहा है। अत भिन्न भिन्न अवसरो पर लिखित अपने निबन्धो को पुस्तक रूप मे सयोजित करने की इच्छा का होना स्वाभाविक है किन्तु राजस्थान साहित्य अकादमी की इस योजना के प्रति अनुभूतियो की प्रेरणा वर्ष 96 97 मे लिखित काव्य रचनाओ को पाडुलिपि रूप देकर पूर्ण हुई है।

अनुभूतियो के आयाम उक्त कालखड की अनुभूतिया का प्रतिविम्ब है। काव्य विशुद्ध अनुभूतियो के सिवा क्या है। अनुभूतियो के आयाम को तीन खण्डो मे विभक्त किया है। प्रथम खण्ड सौन्दर्य एव अनुभूतियाँ हैं जिसमे सौन्दर्य के प्रति मेरे आसक्त विश्वास एव अन्य अनुभूतियो सम्वन्धी रचनाओ को सकलित किया है। द्वितीय खण्ड सघर्ष और अर्न्तद्वन्द्व म व्यवस्था के प्रति सघर्ष एव मानसिक व जीवन के अन्तर्द्वद्वो सम्बन्धी रचनाओ को सग्रहित किया है। तृतीय खण्ड 'तलाशता हूँ तुम्हे को विस्तृत रूप दे एक स्वतन्त्र सकलन के रूप मे प्रकाशित करवाने की इच्छा है। अपनी ईश्वर सम्वन्धी अनुभूतियो के अभाव मे मुझे यह आयाम कुछ अपूर्ण प्रतीत हुए अत इस खण्ड को इस सकलन मे समाहित किया है।

अपनी प्रेरणा व प्रभाव का उल्लेख करने का मोह त्यागने मे असमर्थ हूँ। अति न्यून सकोच के साथ स्वीकार करता हूँ मेरी अनुभूतियाँ दूसरो के लेखन एव परिवेश से प्रभावित व प्रेरित होती रही हैं। इस प्रभाव के कारण मन मे प्राय एक सदेह भी रहा है क्या यह उचित है ? पर रूसी कवि वोरर्वेज की एक उक्ति लिखने की इच्छा जीवन से नही अपितु दूसरो के लेखन से आती है' ने तथा अशोक वाजपेयी की पुष्टि ने सदेह की धुध को हल्का किया तो दयाकृष्ण विजयवर्गीय से चर्चा के बाद यह सदेह समाप्त हो चुका है। मैं यरोस्लाव साइफर्त एरिष फ्रीड जगन्नाथ प्रसाद और सीताकात महापात्र से प्रभावित रहा हूँ और इनके लेखन से प्रेरित होता रहा हूँ। यरोस्लाव साइफर्त एव एरिष फ्रीड के अध्ययन से मेरी अनुभूतियो के आयाम विस्तृत हुए तो जगन्नाथ प्रसाद दास व सीताकात महापात्र के अध्ययन ने मेरी अनुभूतियो के आयामो की तीक्ष्णता व गहनता मे वृद्धि की है। मै हृदय से अनुभूत करता हूँ यह गहनता ही भारतीय दृष्टि की विशेषता है।

डॉ नगेन्द्र की भारतीय काव्य शास्त्र की परम्परा एव राइनेर मारिया रिल्के की पत्र युवा कवि के नाम ने मेरी काव्य सम्बन्धी मान्यताओ का परिष्कार किया हैं। पहली पुस्तक ने काव्य सम्बन्धी मेरा सैद्धातिक ज्ञान बढ़ाया तो द्वितीय पुस्तक ने काव्य रचना सम्बन्धी मूल बातो की जानकारी दी। द्वद्व एकात अनुभव आदि की महत्ता स्पष्ट की है। इन सभी प्रभावो के मध्य मेरा काव्य सृजित हुआ है और अगर कहीं यह प्रभाव परिलक्षित हो सका हो तो यह मेरे लिए सतोष की अनुभूति होगी।

मकर सक्रान्ति
14 जनवरी 98

कमल गुप्ता

अनुक्रमणिका

(अ) सौन्दर्य और अनुभूतियाँ

(स) तलाशता हूँ तुम्हे

'जब भी तुम्हे अपने को व्यक्त करना हो अपने आसपास की चीजो पर ध्यान दो सपनो मे देखी छवियाँ अपने को स्मरण रह गई वस्तुएँ। अगर अपना रोज का जीवन दरिद्र लगे तो जीवन को मत कोसो अपने को कोसो। स्वीकारो कि तुम उतने अच्छे कवि नही हो पाये हो कि अपनी सिद्धियो समृद्धियो का आह्वान कर सको।

-राइनेर मारिया रिल्के

"सौन्दर्य और अनुभूतियाँ"

अनुभव

कुछ भी महत्वहीन नही
जीवन मे
क्षुद्र से क्षुद्र अनुभव का भी
होता है पर्याप्त महत्व
हर सूत्र सबधित है
किसी दूसरे सूत्र से
हर अनुभव है
एक गहन आश्चर्य
एक नव स्वप्न
अद्वितीय आकर्षण ।
जीवन की अदृश्य सुगध
अनुभव के पुष्पा से
होती है उत्पन्न
अनुभवो से उपजता है
स्वय पर विश्वास
अनुभूतियो पर आत्म आस्था
अनुभवो से ही
सबकुछ प्रस्फुटित होता है ।
त्वरित या वाधित नही होती
जीवन की गति
अपनी ही गति से
अन्तर्दृष्टि का होता है विकास
हर अनुभव का भ्रूण
बन जाता है अभिप्राय
पूर्णन की इस प्रक्रिया को
समय से मापना व्यर्थ है ।
जीवन का समग्र विकास हो

अनुभव का अर्थ है ।
परे रहता है सदैव
गणना से अनुभव
निरासक्त मौन व वृहत् अहसास
हर दिन अनुभव से
नवरूप प्राप्त कर उभरते हैं
सनातनता के रूप में
धैर्य एव आस्था
बनते रहते हैं अनुभव
जीवन जीना और समझना
समझ का विकास करना
समझ का उपयोग करना
अनुभव है ।
कलाकार की रचना की
पारदर्शिता परिपक्वता
कवि का काव्य
छंदों का गठन अनुभव है ।
आत्मप्रस्फुटन का अनिश्चित काल
आतरिक प्रवृत्ति का प्रकृति का
कुप्रभावों का
विविध प्रचुर प्रक्षालन
मोह से मुक्ति
सभावनाओं का विस्तार
विकास का सेतु
पक्वित जीवन की सुरभि है अनुभव ।

कविताएँ

स्मृतियो की अनमोल मजूषा से
दूरगामी अतीत के रसातल मे
लीन भावनाएँ
हठात उभर आती हैं ।
मद उजालो म गूँजती है
दूर से आती हुई कोई ध्वनि ।
अन्तर्मुख हो समा जाता है
मन किसी नीड मे
अन्त के किसी अज्ञात उदगम से
स्वत अवतरित होती है
मेरी कविताएँ ।
वो अच्छी है या कि बुरी
मुझे परवाह नही ।
काव्य शास्त्र की कसौटियो पर
वह खरी उतरती है या नही
मुझे चिन्ता नही ।
वह है मेरा नैसर्गिक खजाना
मेरा अतरग अश
मेरी आवाज
मेरा अवसाद
मेरी आकाक्षाऍ
मेरी कविताऍ ।
मेरे मन से गुजरने वाले विचार है
सौन्दर्य के प्रति
मेरे आसक्त विश्वास है
मेरी खामोश हार्दिक निष्ठा
मेरे सपनो की छवियाँ
मे'ी स्मृतियो की वस्तुएँ
मेरा दैनदिन जीवन
उभरते हैं मेरी कविताओ मे
मेरी जीवनी शक्ति के

गहरे ऊर्जा स्रोत से
उदभित होती हैं एकात मे
मेरी कविताएँ ।
मेरी नियति है
कविताओ की बोझिलता एव भव्यता
मैं वहन करता हूँ
आलाचनाएँ भी
किसी भी प्रतिफल की
अपेक्षा के बिना
लीन रहता हूँ
कविताआ के ससार मे
अन्तर्दृष्टि के आलोक मे
यकायक ज्योतित हो उठती है
आस्था के अतरिक्ष मे
अन्त स्वर से गुजित हो उठती है
मेरी कविताएँ ।
मेरी कविताओ मे है
मेरे जीवन के
अजनवी असाधारण और
अव्याख्येय अनुभव
मेरी कायरता
यथार्थ की विराटता
मेरी विवशता मेरे क्षोभ
मेरा सबकुछ समाहित है
काव्य सृजन ससार मे
कोई अनजाना रहस्य नही
कोई अनोखा ज्ञान नही
मेरी कविताओ मे ।
कदाचित विचारो के भ्रूण
होकर पूर्ण
बन जाते है कविताएँ ।

एकात

अदीप्त सवेदन से
आत्म अतरिक्ष मे
स्पदित होता है एकात
आदिम अबोध अवस्था से
जागृत हो उठना
निस्सग पवित्रता से
प्रारम्भ होता है एकात
अकेलापन नही
अभाव भी नही
उलझनो का अनुसधान नही
रहस्यो का शोध नही एकात ।
ज्ञात से अज्ञात तक
दृश्य से अदृश्य तक
बाह्य से अन्तर तक
देह से आत्म तक
जाने की राह
चैतन्य का विस्तार
चेतना की समग्रता है
शक्तियो का केन्द्रीभूतन है एकात ।
समस्त आहटो का
सवेदन के विस्तार मे
सचित हो जाना
जीवन का असीम हो जाना
आत्म शाति की
व्यापकता मे लीन हो जाना
आवेग की आनन्दमय अवस्था है एकात ।

काव्य का उद्गम

मेरी सत्ता से गुजरते
हर स्वप्न मे
चिंतन को
आत्मसात् करने के
निर्मम प्रयत्न मे
जीवन के सरोकारो पर
सर्वदा ही प्रश्नचिह्न पाता हूँ।
एकाग्रता की गहनता पर
करती है प्रहार
चिंतन की तीक्ष्ण धार
सृजन के ध्येय से
ऊर्जित होता हूँ
फिर न जाने कैसे
खो बैठता हूँ समस्त ऊर्जा।
जीवन की उलझी हुई
प्रश्नाकुलता म
सारे क्षाभ समस्त अवसाद
मस्तिष्क के अन्तरिक्ष मे
निरन्तर गतिरत रहते हैं
गति के दरम्यान
उलझता रहता हे जीवन।
जीवन के
समस्त उलझे हुए प्रश्न
अपनी ही धुरी पर
तप करने पडते है
स्वाभाविक है रुझान
सामान्य और सरल के प्रति

फिर भी ।
दुर्गम प्रिय है ।
कोई छाया ?
कोई रहस्य ?
न जाने क्या पाना चाहता हूँ ?
कदाचित एकात म
स्वय की छाया से
करना चाहता हूँ मैत्री
आत्म रहस्य पर
करना चाहता हूँ शोध
एकात म ही
पहुँच सकूँगा
काव्य के उदगम तक
जो मेरे अवचेतन म
कही गहरे सुसुप्त है ।

इतिहास

इतिहास वह बजर भूमि है
जहॉ एक हरी फुनगी भी
उगने मे असमर्थ है
लेकिन फिर भी इतिहास से
आदमी मुख नही मोड पाता
वह विवश है
इतिहास का बोझ ढोने को ।
विडम्बना ही तो है
मनुष्य को होना था
इतिहास का निर्माता
पर वह होकर रह गया है
इतिहास का दास ।
बेडियो मे जकडा हुआ
पीड़ा और त्रासदी से भरा इतिहास
बन गया है अग्नि
झुलसा रहा है मनुष्य को ।
इतिहास स सीख
आसमान की ऊँचाइयो तक
जाना था मनुष्य को
पर वह लुढ़कता जा रहा है
पाताल की गहराइयो मे ।
क्या मनुष्य का चटटानी हृदय भेद
कोई ममत्व व कारूण्य का स्रोत
कभी नही फूटेगा ?

त्रासदी का सुखद पक्ष

आकाश गगा मे छितरे तारा की तरह
विखरे हुए विचार सवेदनाएँ
सवकुछ गडड मडड है
मस्तिष्क के अतरिक्ष मे
चारो ओर नजर आती है
अन्तहीन खाइयाँ
मै क्या करूँ ?
क्या है मेरे जीवन का उद्देश्य ?
क्या है मेरी आकाक्षा ?
मूल्यविहीनता के विष से नीली दुनिया
आदमी की बोझिल आत्मा
जिन्दगी के वर्फीले तूफान
तर्कों की शुष्क मरूभूमि
बौद्धिकता का पागलपन
एक त्रासद दौर
पर त्रासदी का भी
होता है सुखद पक्ष
त्रासदी मन को झकझोर देती है
परिस्थितिया से उबरने की
    प्रेरणा वन जाती है ।
प्रेरणा बन जाती है मनोबल
और अन्तत मनोबल ही
    हमारी रक्षा करता है
और हम सहजता से
शाखो पर पुष्पित बादाम के फूलो की भाँति
झेल पाते हैं जीवन के बर्फीले तूफानो को ।

आत्मज्ञान

बिखर जाते है
अमरत्व के भ्रम ।
अनावृत्त हो जाते है सत्य
उमडती हुई बरसाती नदी
आकाश की चेतना बन जाती है
चेतना और मृत्यु पूरक हो जाते है ।
पूर्णता की तलाश पूर्ण नही होती
समय की पगडडियो पर
चलते है हम लडखडाते हुए ।
इस राह पर गहन अवसाद है
शून्य है
समय की भारी पदचापे है
शून्य से ही शनै शनै
जागृत होती है चेतना ।
जीवन के विराट जतर मतर मे
एक गली स दूसरी गली की
भटकन तो शेष ही रहती है
निकलने की राह कहॉ है ?
शेष भ्रम ही यहॉ है ।
यह विचित्र अनुभूति ही
यदि आत्मज्ञान है
तो इसे पाने मे इतना विलम्ब क्यो ?
जीवन मे अब आवेग कहॉ ?
मृत्य से है द्वेष
तो जीवन से भी प्रेम कहॉ ?

मौन प्रेम

मौन प्रेम
एकाकी वेदना
गहन नि शब्द आवेग
नग्न सवेदनाएँ
प्रेम की राहो पर
हजारो पल्लवित पुष्प
मोहक सुरभि
साझ की समुद्री लहरो पर
झुका हुआ रक्तिम आकाश
एक सर्द आभास
एक अनबुझी प्यास
पीडा का नवीन आयाम
शाश्वत का एक
वस एक क्षण
जीवन का स्पन्दन
न कोई प्रश्न न कोई उत्तर
पसरा हुआ मौन
और कही हवाओ मे तैरता
मौन प्रेम
जीवित है
आज भी
जीवित रहेगा
सर्वदा ही ।

स्वप्न अक्षत नही होते

स्वप्न अक्षत नही होते
उन्हे कभी न कभी तो
बिखरना होता है
यही है
स्वप्नो की नियति ।
स्वप्न जब तक जीवित होते है
उनकी सतरगी देह
आकर्षक लगती है
इन्द्रधनुष की भॉति ।
किन्तु यथार्थ मे
वह इन्द्रधनुष नही
मृगमरीचिका की भाँति
आभासी होते है ।
पर वास्तविकता का आभास
सर्वदा विलम्ब से होता है
समय गुजर जाने के उपरान्त
जब स्वप्नो की मृत देह के पास
हमे अश्रु बहाने होते है ।
स्वप्नो की भगुरता दृष्टिगत कर
एक प्रश्न ज्योतित होता है
मनोमस्तिष्क पटल पर
अगर स्वप्न वास्तविकता के
निकट होते तो ?
कम से कम तब
स्वप्नो की
असामयिक मृत्यु तो नही होती ।

पूर्णत्व

अर्न्ततम तक
अनुभूत करता हूँ
अपनी अपूर्णताएँ
फिर भी
कोई क्षोभ नही
कोई शोक नही
जिये जा रहा हूँ
दृढ़ आस्था के साथ
धीर आश्वस्ति से
कि एक दिन
लीन हो जाऊँगा
पूर्णत्व मे ।

प्रेम

वेगवान वायु मे
किसी कातर पर की भाँति
कोमल किन्तु यथार्थ
सवेदन है प्रेम ।

शिलाखण्ड मे
किसी श्रेष्ठ धातु की
रेखा के समान
चमकता है प्रेम ।

शाश्वत अनुभूति
परम सत्य
इस अस्थायी जगत मे
स्थायी ह प्रेम ।

इतिहास का सत्य

इतिहास का सत्य
आवृत्त होना है
भ्रामक तथ्यो से
भ्रामक नजरियो से
इतिहासकार भी
मुक्त नही होते
पूर्वाग्रहो से
कदाचित इसी कारण
विरूप हो जाता है
इतिहास हर युग मे ।

यह विरूप
विरोधाभासी इतिहास
उलझने पैदा करता है
नही कर पाता
जीवन का विकास
अपितु वन जाता है
जीवन का अवरोध ।
वर्तमान को
अतीत के सत्य का
कभी नही हो पाता
सच्चा अवबोध ।

बारिश का सौन्दर्य

चिडियो का शाखो पर फुदकना
मधुरतम गान सा चहचहाना
रग विरगे पुष्प गुच्छो पर
आकर्षक तितलियो का मडराना
आद्र पवन मे धुल गई है
मादक सुवास मृदा की ।

बारिश का भीगा भीगा सौन्दर्य
अभिभूत कर लेता है हृदय को
जब यह रूपवती बाला
झटकती होगी
अपने भीगे केशो को
तब होती होगी बूँदा बाँदी ।

मुग्ध हृदय से सराहता हूँ
बारिश का सौन्दर्य
रक्तवर्णी पुष्पो से लदे गुलमोहर
काई के हरेपन से हरी दीवारे
चहुँ ओर बिखरी है हरीतिमा ।

वर्षा मे नहाकर उल्लासित है
सभी पादप नवरग नवआभा से
इस रूपवती बाला का
श्वेत मौक्तिक कण्ठहार
टूटकर आ गिरा है पाता पर

चमकती हैं मोतियो की भाँति
पत्तो पर ठहरी हुई
वारिश की बूँदे ।

दुनिया की रगत वदल गई है
कल तक तपता था वातावरण
आज कुछ सर्द हो गया है ।
ऐसा लगता है
आसमान मे चढ़कर
कोई अवोध शरारती वालक
जल उडेलता जाता है
सारी दुनिया को भिगोने के लिए ।

यह सौन्दर्य अदभुत है ।
मेघाच्छादित आकाश देख
जागृत होती है हृदय मे
बारिश मे नहाने की प्यास ।
निहारता हूँ पानी की फुहारो को
हवा मे मिलती पानी की बूँदो को
मुग्ध हृदय स सराहता हूँ
बारिश का सौन्दर्य ।

खेत

अरूणाभ आकाश तले
सुखो की तरह फैले
हरे पीले खेतो मे
स्पष्टत परिलक्षित है
कृषको का श्रम
और धरा की उदारता ।
ईश्वर ने
फसलो पर छिडका है
दिव्य इत्र
बालियो और मृदा की
मिश्रित महक
आ रही है
मेरे नथुना तक ।
इन हरे भरे खेतो को देख
कृषक भूल गए होगे
सारे दु ख सारी मेहनत ।
ओस के नशे मे
झूमती फसलो को देख
खेतो मे उड़ते
सपनो को अनुभूत कर
चूमना चाहता हूँ खेतो को ।

कवि या कलाकार होना ।

कवि या कलाकार होना
कभी भी आसान नही होता
उनकी दृष्टि उनकी सोच
और उनकी सवेदनाएँ
कुछ भिन्न होती हैं ।

वे पढ़ते हैं
सौन्दर्य को कर्त्तव्य को
जीवन को भावनाओ को
और मनुष्य की सभावनाओ को ।
वे सोचते हैं और सोचते रहते हैं
जो भी पढ़ा उस वारे मे
वे सवाल करते हैं स्वय से
और उत्तर तलाशते हैं ।
वे बहस करते हैं
अपने आप से ।

जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण
सर्वदा भिन्न होता है
जन साधारण से
वे कला मे उकेरते है चेतना ।
वे सृजन से समाज को
जागृत करना चाहते हैं ।
वे सही गलत की पहचान कर
गलत का विरोध करते हैं
कला से ।
वे आशा के स्वप्न सजोते हैं

घोर नैराश्य मे भी
वे सृजनरत रहते है
पूर्ण निष्ठा के साथ
वे समर्पित होते है
कला के उद्देश्यो के प्रति ।
कभी भी आसान नही होता
कवि या कलाकार होना ।

अतीत

अतीत कितना समृद्ध होता है
हर्ष विषाद सुख दु ख
सौन्दर्य कर्त्तव्य स्वप्न
आकाक्षाएँ मूर्खताएँ
अतीत के पास सबकुछ है ।

अतीत कितना उदार होता है
अध्यापक की भाँति
सिखाता है जीवन जीना ।
कही भी कभी भी
अतीत सर्वदा स्वागतातुर रहता है ।

स्मृतियो के द्वार से
अतीत म प्रवेश किया जा सकता है
किन्तु अतीत को
परिवर्तित नही किया जा सकता ।

अतीत सम्पूर्ण होता है
और जटिल भी
हर बार उसे
उसी की शर्तो पर
समझना पड़ता हे ।

मेरे शब्द ..

मेरे शब्द वहुत हल्के है
झरे हुए पुष्प या
गर्मियो की भोर मे
केले के पत्ते पर विखरी
ओस की बूँद की भाँति ।
उनमे कोशिश है
तुम तक पहुँचने की
पर वे तुम तक पहुँच नही पाते
अत मेरे शब्द वहुत हल्के हैं ।
मेरे शब्दो मे
अनुभूतियाँ हैं भार नही
वे अपग हैं
वे चल नही पाते ।
उनमे सौन्दर्य है
आकर्षण है रस है
किन्तु वे तुक मे नही
मेरे शब्द

सबध

सबधा का रेखागणित
समझ पाना सभव नही
इस रेखागणित मे
सबधो की समस्त आकृतियॉ
जैविकी के अमीबा की मानिद
निरन्तर परिवर्तनशील हैं ।
सबधो का रेखागणित
अजीबो गरीव विज्ञान है
जिसमे नवीन शोध हेतु
अभी वहुत कुछ शेष है
स्वार्थाधारित सवध
भावनाओ की वर्जनाएँ ।
यहॉ तनाव सत्रास वेदना
व्यथा पीडा लुप्त है
ओढ़ी हुई
कृत्रिम मुस्कानो के पश्च मे ।
बोझिल होते सबध
रस्मो की तरह
चेहरे पर खुशी चिपकाकर
निभाए जाते हैं ।
किसी जीर्ण शीर्ण ऐतिहासिक पुस्तक के
क्रूर पाठक की भाँति
हृदय पर बोझ बन जाते हैं सबध
और सवधो मे निहित सवेदनशीलता ।

सवधो की कई आकृतियॉ
समाप्त हो जाती हैं

अपनी कमजोरिया की ग्लानि की भाँति ।
सवधा का रेखागणित
जीवन के अकगणित सा सरल नही
यहाँ लाभ ओर हानि क सूत्र
बुरी तरह से उलझे हुए है ।
इस रेखागणित से मुक्ति का
कोई उपाय नही कही ।

आज मुझे . कल तुम्हे. . .

देखता हूँ
कैलेण्डर के पीले पडते पृष्ठ
रात के आगोश मे खोते हुए दिवस
बिखरते हुए पुष्प
मिटती हुई चाँदनी
शाख से झरते हुए पत्ते
चेहरो पर पडती हुई झुर्रियाँ ।
देखता हूँ
समय का दुराग्रह
एक एक कर सभी को
समय के कूड़ेदान मे जाना होगा ।
समय से
कोई तुम्हे नही बचा सकता ।
आज मुझे
कल तुम्हे
समय की आग मे
सभी को जलना पडेगा ।

स्मृतियॉ

स्मृतियो के वे मोहक अध्याय
विस्मृत नही कर पाया आज तक
बसत की खुशनुमा श्रतु की भाँति
आते हैं हर्षमय पल
स्मृति जगत् मे लीन होने पर
समय थम सा जाता है ।

पतझड़ के यथार्थ की भाँति
झड़ जाते हैं
स्मृति तरु के समस्त पात ।
स्मृतियाँ कभी इतनी उष्ण हो जाती हैं
कि हृदय से उठती है
वाष्प सवेदनाओ की भावनाओ की ।

स्मृतियाँ कभी इतनी सर्द हो जाती हैं
कि जम जाता है
आँसुआ मे अतीत ।
उम्र के अन्त तक
मौसमो की तरह
यूँ ही आती जाती रहेगी स्मृतियाँ ।

कवि

(1)

कवि तकरार करता है
शोर करता है लोगों को
किसी नेता के
चुनावी भाषण की तरह।
कविता लिखता है
प्रेम मदिरा और गुलाब पर
व्यथा पीड़ा और काँटों पर
तुकांत या अतुकांत कविता।
कवि की कविताओं से
कहीं ज्यादा मधुर होती है
बरतनों की आवाज
फूलदान के टूटने की आवाज
वाहनों का कोलाहल
लोगों का झगड़ा
वह शोर तो नहीं करता
कवि की तरह।
उधार के सपने
जागी हुई रात
लड़खड़ाते हुए गरीब दिन
ऐसे मे भी
कवि रचता है कविताएँ
ऐसे मे रची कविताएँ
शोर ही तो करेंगी।

(2)

कवि रचता है
अपनी कविताओ मे
आदर्श ओर मूल्य ।
कवि विचारा को
गूँथने का यत्न करता हे
अनुभूतियो को
शब्दबद्ध करता है ।
जगत के सौन्दर्य को
कवि अमर करता है ।
प्रेम को आकृति
व्यथा को जीवन
देता है कवि ।
शब्दो की लौ जलाता है
अपने हृदय को
झुलसाता हे कवि ।
शब्दो मे छदा म
जीवन को
अनुभूतियो को
ढालने की चेष्टा करता है कवि ।

प्रेम

(1)

कामना की अवाध्य शक्ति
हृदय की आनन्दप्रदायक यातना
उन्मादपूर्ण कामनाएँ
धुँधली चेतना
व्याकुल अनुभूतियाँ
अन्तहीन वेदना का हर्ष
कविता जैसी स्वप्निल पवन
चिरन्तन मादकता
अलकृत अस्तित्व
आत्मिक भव्यता मे आस्था
वाहे फैलाकर
स्वर्ग को आगोश मे भर लेने की इच्छा
और आशा की कपायमान किरण
यही है प्रेम।

(2)

प्रेम अधिकार नही
किसी हृदय पर
प्रेम शाश्वत पवित्रता है।
प्रेम वियोग क्रन्दन नही
जीवन का स्पदन है
शाश्वत सवेदन है।
प्रेम सवधो की पूर्णता नही
भावो के आदान प्रदान का
पुल भी नही
प्रम वह मौन भाषा है
वह राह है

जो ईश्वर तक ले जाती है ।
प्रेम सत्य है प्रकाश है
जीवन का विकास है ।

(3)

खडित अभिन्नता का
आनन्द नही /
दूसरे को पा लेने की /
निरर्थक चेष्टा नही /
समर्पण नही /
वधन नही /
घनिष्ठता नही /
पागलपन भी नही /
प्रेम
प्रस्थान है
परिपक्वता की ओर /
पराकाष्ठा की ओर /
प्रस्फुटन की ओर /
निर्माण की ओर /
अनुभूतिया के
विस्तार की ओर /
प्रश्नोन्मुखता की ओर /
प्रम
जीवन अनुभव का
सबसे विराट क्षेत्र /
इसका न कोई
स्पष्टीकरण है ।
और ना ही कोई विकल्प ।

विचार

अबूझ सशय
भटकता सुख
जिद्दी स्वप्न
आकाक्षाओ का मकड जाल
अतीत से तिक्त समय
विस्मृत सुबह
असपन्न दायित्व
जर्जर पत्र
कार्यव्यस्त पल
हर ओर छितरे है
भिन्न रूपी विचार ।

किसी दुरुह प्रक्रिया से
भावनाओ के मथन से
कदाचित उपजते ह
मस्तिष्क मे विचार
या अथाह अज्ञात अतरिक्ष से
मस्तिष्क की शुष्क गहनता मे
चल आते हे विचार ।
समय की अधाधुधता मे
आवारा मनचले युवको से
भटकते है विचार ।

विस्मय का सम्मोहन
कल्पनालाक का पर्यटन

स्वप्न भी तो हैं विचार
द्रुतगामी जीवन मे
अबाध गति से
परिवर्तित होते हैं विचार।
विचार किसी के दास नही
दिमाग से झटक देने पर
उथले पानी मे
मछलियो की भाँति
छटपटाते हैं विचार।

मेरा देश

विस्थापित जन
वच्चो के मायूस झुण्ड
वेरोजगार युवाओ की कतारे
मानवीय दुर्भिक्ष
शीत को कँपकँपी अपनी
ग्रीष्म को अपनी आँच
देने वाली भयानक गरीवी
'चारा जैसे घोटाले
फूहड़ रिवाज अध विश्वास
कुर्सी चिपकू राजनेता
मेरे देश मे सवकुछ है।

मेरे देश मे भी
सत्य असत्य का
नैतिकता अनैतिकता का
पाप पुण्य का प्रेम घृणा का
सदाचार कदाचार का
अनवरत् सघर्ष
चलता रहा है।
किन्तु अपने आदर्शों पर
अपने जीवन मूल्यो पर
सर्वदा अडिग रहा है
मेरा देश।

काव्य

पुराने समय की
अप्रकट इच्छाओ से
ध्रुवीय आकाक्षाओ से
स्मृतियो की कमनीय कोठरियो से
उभरते हैं शब्द
एकाकी शब्द, आतुरता से
भटकते हैं इधर-उधर
निरामय आत्मा से
अधेरे की अमूर्त्त दीवार से
विभिन्न मानसिक अवस्था से
दूर के पश्चातापो से
अनुभूतियो से
मुक्त होते हैं शब्द ।
हवा मे
असहाय तैरते हैं शब्द
शब्द मिलते हैं शब्दो से
शब्दो मे लुप्त होता है
उनके अस्तित्व का रहस्य ।
शब्द भावो का प्रतिविम्ब है
भाव बाँध देते हैं
शब्दो को पाश मे
पर्त दर पर्त समय
काल्पनिकता का आश्रय ले
शब्द समूह का कायाकल्प कर
रच देता है छद ।
छद परस्पर टकराते हैं
अणुओ की भाँति
समय का सर्वभूख कीट
समाप्त कर देता है
छदो का अन्तर्विरोध ।

छद अनुभूत करते हैं
अन्य छदो को
अपूर्व विस्मय से
मस्तिष्क के सकीर्ण आयतन मे
यथार्थ व सवेदनाओ के
अनुरूप व्यवस्थित होकर
छद बन जाते हैं काव्य ।

स्मृतियो की अनमोल मजूषा से
दूरगामी अतीत के रसातल मे
लीन भावनाएँ
हठात उभर आती हैं ।
मद उजालों मे गूँजती है
दूर से आती हुई, कोई ध्वनि
अर्न्तमुख हो
समा जाता है मन किसी नीड़ में ।
अन्त के किसी अज्ञात उदगम से
स्वत ही
अवतरित होता है काव्य ।

काव्य मे समाहित है
सत्य और प्रेम
युगो की अनुभूतियो का इतिहास ।
काव्य में निहित है
जीवन और काल के
अनवरत् स्पदन सवेदन ।
काव्य मे अन्तर्निहित हैं
हर्ष विषाद अवसाद
प्रकृति का सौन्दर्य
हृदय की सवेदनाएँ ।
अनुपम अदभुत
और अव्याख्येय अनुभव
शाश्वत सवेदन है काव्य ।

शब्द जादू है

शब्द पुल हैं
जो जोड़ते हैं
मनुष्य को मनुष्य से,
शब्द नहीं होते
तो मनुष्य
आदिम रह गया होता।
शब्द बुनते हैं काव्य
शब्द कभी भी
असमर्थ नहीं होते
शब्द अभिव्यक्त करते हैं प्रेम
शब्द परिवर्तित करते हैं
युगो की विचारधारा।
अन्धे इतिहास की आँखे हैं
शब्द इतिहास की वीथियों का
परिचय होते हैं
शब्द खाद्य वस्तु नहीं
जिन्हे चबा डाला जाए,
शब्दो की तपिश से
जागृत होते हैं समाज
होते हैं परिवर्तन।
शब्द जादू है,
शब्दजगत् मायावी है
विज्ञान में
शब्द यथार्थ है
कला में
शब्द सम्मोहन है
शब्द आइना है
दिखाते हैं प्रतिबिम्ब,
शब्द जादू हैं
बन जाते हैं आलोक
जीवन के अंधकार में।

सिर्फ वही पढ़े मेरा काव्य

सिर्फ वही पढ़े मेरा काव्य
जो पहचान सके
मनुज के अन्तर्द्वन्द्व
जो खामोशी से
झॉंक सके शून्य मे ।
जो प्रकृति से बाते करने की
रखता हो इच्छा
जिसके हृदय मे
एकात का आनन्द लेने की
उत्कण्ठा हो ।
जो दुनिया की फूहड़ता से जूझे
आक्रोश के साथ
जो अन्तरात्मा की आवाज पर
जीता हो ।
जो सपनो के इन्द्रजाल मे
खोना चाहता हो
जो यथार्थ को अनुभूत कर सके ।
सिर्फ वही पढ़े
जिसने सोचा हो
पल दो पल
पीड़ा के रग रूप के विषय मे
जिसने अनुभूत किया हो
भ्रष्टाचार के प्रति
सीने मे आग का निर्झर ।
जिसे उम्मीद हो
भूख और बेकारी के
अनसुलझे सवाल के समाप्त होने की

जिसने की हो
कम से कम एक ईमानदार कोशिश
दुनिया को समझने की,
मनुष्य को समझने की
स्वय को समझने की ।

हम कवि है : अनुपम कृतित्व

हम वैज्ञानिक नहीं, मठाधीश नहीं
सिपाही भी नही राजनेता भी नहीं
इन सभी से परे हैं हम
पर इन सभी से जुड़े हुए
इनकी सवेदनाओ तक ।
अनुभूत कर सकते हैं
अपने हृदय से इनकी भावनाएँ हम ।
हम कवि हैं अनुपम कृतित्व ।
हम निर्धन नहीं धनवान भी नहीं
मात्र जीवन यापन का सबध रखते धन से
हमे परवाह हैं समाज की
इन भद्दी अँगुलियो से
प्रस्फुटित होती है शाब्दिक ऊर्जा ।
स्वर्ण पखो से
शुभ्र स्वप्नलोक मे विचरते हम ।
पुच्छल तारे से टूटते रहे हृदय हमारे
समय का स्वागत किया
हमने अपने गीतो से
शब्दो की शक्ति को पूजा
हमने अपने छदो मे ।
विद्रूपता के ताल पर भी
हम रचते छद अथक असतोष से
विश्व विस्तार के प्रत्येक खण्ड मे
घोर दारिद्रय के दलदल तक मे
समायी हैं हमारी आत्मा ।
पावो तले कठोर सत्यों को खूँदते हम
आशा रहती है हमें

सत्य चमकेगा नई ऊर्जा ले,
हम व्याकुल नही, व्यग्र नहीं
कि हमारी कविताओ का क्या होता है ?
स्निग्ध सध्या को ताकते खोजी हम
हम शिशु सुलभ जिज्ञासा से देखते सबकुछ
महामिथ्या देह का नाश भी
हम दृढ भावुक !
मुक्त हृदय से जीते हम,
हम

शब्द

समय के प्रबल प्रवाह मे
शब्दो का रूप
परिवर्तित हो जाता है
सकुचित दायरो मे बद्ध हो
स्थिर जड़ हो जाते हैं शब्द ।
कवित्व हेतु अनिवार्य है
शब्दो की गत्यात्मकता
कभी कभी नही मिलते
अनुभूतियो के अनुकूल शब्द
अनुकूल शब्दो के अभाव मे
मृत होने लगता है कवित्व ।
शब्द बाध्यता है
शब्दो के अभाव मे
जीवित नहीं रहा जा सकता
एकात मे मौन मे भी
साथ होते हैं आत्मा के शब्द
स्मृतियो की अनुगूँज ।
अभूतपूर्व नियति की तरह
खुलते हैं शब्द
शब्द सूत्र बनकर बुनते हैं
एक विराट ताना बाना
शब्दो के असख्य आश्चर्य
ले जाते हैं स्वप्नलोक मे
शब्दो मे समाहित ऊर्जा अद्वितीय
शब्दो का आकर्षण दुर्दमनीय
जीवन के प्रति आस्था को
गहरा करते हैं शब्द ।

कविताओ की पुरानी डायरी

सहमी-सहमी सी
सबसे मुँह चुराती
मेरी कविताओ की
पुरानी डायरी के
पृष्ठो मे
कपन जागृत कर रही है
पखे की हवा।
मेरी टूटी फूटी कविताएँ
डायरी से निकलकर
धुनी रूई के फाहो सी
उड़ने लगती हैं
शोक स्तब्ध प्रेम
निष्ठुर स्मृतियाँ,
समय और शब्द
इतिहास और विषाद,
आशा और उत्साह
मेरी निजी अनुभूतियाँ
कविताओ से निकल
कमरे मे
उड़ने लगती हैं।
अपना हाथ
बढ़ाने के बावजूद
उन शब्दो का
उन अनुभूतियो का
कोई सिरा
थाम नही पाता मैं
विफलता के बाद भी
करता हूँ प्रयत्न

बेफिक्री

विस्मृत कर देता हूँ
कभी कभी
हृदय के सारे अवसाद
जीवन के समस्त विषाद
सामाजिक विडम्बनाएँ
जीवन की परवशताएँ
नैतिकता का हश्र
षडयत्रो के दुष्चक्र
प्राकृतिक आपदाएँ
मानवीय अपराध
दुनिया की उल[illegible]ा से
मुक्त होकर
रातो मे तारे गिनता हूँ
कभी कभी बेफिक्री से ।
स्वाभिमान का आहत होना
प्रणय की विफलता
भविष्य की चिताएँ
जीवन के सारे सत्रास
मस्तिष्क के सारे तनाव
सबकुछ छोड देता हूँ
उस सर्वोच्च पर ।
तब नही करता
मैं परवाह
समय की गति की भी
कितने सुखद होते हैं
कभी कभी आने वाले
वे क्षण बेफिक्री के ।

समय के पाँव नहीं होते

समय के पाँव नहीं होते
अतः वह चलता नहीं
वह दौड़ता भी नहीं
किन्तु वह अपाहिज नहीं
वह उड़ता है
समय के पंख होते हैं ।

वर्ष गुजर जाते हैं क्षणों की भाँति
द्रुत गति से उड़ता है समय
न जाने कहाँ से आकर
कहाँ जा रहा है समय ?
समय क्लान्त नहीं
नहीं चाहिए उसे विश्राम !
कभी नहीं रुकेगी
समय की उड़ान ।

रात

जिन्दगी से चिपकी
उदासी की तरह
चिथड़ा आकाश से
चिपक जाती है
उसाँस लेती रात ।
बस्ती पर छा जाती
कुरेदती मायूसी
अंधेरे की मोटी तह सी
बिछ जाती गली गली
अजनबी सी रात ।

रात क्या है ?
अंधेरे का नागपाश
जो डस लेता है
आसमान को
भोर रूपी शिशु के
प्रसव की
प्रतीक्षा करती माँ ।
कैलेण्डर पर
गुजरे कल
और आने वाले कल
के बीच का स्थान ।

" संघर्ष और अन्तर्द्वंद्व "

मनुष्य

गहन और उत्कट अकेलापन /
दीर्घ अकेलेपन से घिरा /
दुर्गम समय /
समय और स्वत्व से /
एक निजी ससार का निर्माण /
निर्माण की पराकाष्ठा का सुख /
सुख जीवन की /
समस्त उज्जवल व पवित्र सभावनाओ को /
नष्ट होने से वचाने का /
वचा लेना अपने विस्तार को /
अपने भीतर प्रकाश और प्यार को /
अव्यवस्थित व दिशाहीन होने से /
इतना कुछ करने के पश्चात् /
होता है वोध अपने मनुष्य होने का /

सपना

तमाम जर्जरता के वाद भी /
घनीभूत वेदना के साथ भी /
हम सपनो की तलाश मे रहेगे सर्वदा ही /
जमी न सही आस्मा तो एक है /
उसे कौन खड खड कर सकेगा ?
एक दिन उगेगा वह सूर्य /
जो हर आँख मे सच की रोशनी भर देगा /
आस्था ही सपनो को यथार्थ वनाती है /
हृदय को आस्था के रगो से भर दो /
आँखो मे इन्द्रधनुषी सपने सजा लो /
वेदना रहित विश्व का सपना /
मानव की सर्वोच्चता का सपना /
युगो से हम वढ़ते रहे हैं /
अक्लान्त धीर आश्वस्ति के साथ /
इन्ही सपनो को साकार करने के लिए /

अमृत और विष

सामाजिक ढाँचे मे व्यवस्था मे घुली /
विष की हर बूँद ने /
नैराश्य भर दिया है हृदय मे /
कहाँ होगी परिणति इस वैषम्य की ?
क्या हमे ऐसे ही जीना होगा ?
सभी जूझते हैं /
अपने अपने निजी स्तर पर /
चिताओ के इन व्याकुल तूफानो से /
कही तो होगा कोई समाधान ।
आदमी के विष से नीली दुनिया मे /
कहाँ है अमृत ?
अमृत का शोध सभव हो न हो
किन्तु इसी अमृत के कारण /
बची हुई है /
आज तक ये दुनिया /

क्राति

एक दिन
पाषाण भी जागृत होगे
भ्रष्टाचार के विरूद्ध
क्राति के लिए ।
सत्य को
कब तक आबद्ध रखोगे
साक्ष्यो की परिधियो मे
न्यायालयो के निर्णयो मे ?
इतिहास के
जीर्ण शीर्ण पृष्ठो से
अतीत के पदचिह्नो पर
मूर्त्त होगा सत्य ।
यह स्वप्न
कब तक स्वप्न रहेगा ?
बहुत जल्दी आएगी
वह क्रान्ति भ्रष्टचार के विरूद्ध
हम सभी को
उसका साथ देना होगा ।

लोकतत्र

वन्दूको के पहरे मे
सिसकता लोकतत्र
प्रभुता के मद मे
अधे राजनेता
सत्ता के साथ
खुलेआम व्याभिचार करते
नेताओ के चमचे
अहकार मे ऐठे
चुनाव आयुक्त
भ्रष्टाचार की धुध मे
क्षीण हो गई है दृष्टि
फिर भी
स्पष्टत दृष्टिगोचर होता है
मौत के भय से कातर
शर्मिन्दा लोकतत्र ।
पीड़ा से आहत
विह्वल लोकतत्र ।

प्रशासन के चीथड़े
न्याय की नेत्रहीन देवी
अब तक ढँक रहे हैं
लोकतत्र की लाज
कर्ज मे डूबा लाचार देश
बदजायका जिन्दगी जीते नागरिक ।
निराश मतदाता
उदास कदमो से
जाते हैं मतदान केन्द्रो तक

जम्हाई लेते हुए
देते है वोट
दशको से यही सबकुछ
बारम्बार होता आया है
कभी उत्साही था
अब तो निष्क्रिय सा
हो गया है लोकतत्र ।
जिसकी निरीह आँखो मे
ठहरा है गहरा अभियोग ।
बेसहारा दरिद्र
भूख की काली छाया
भ्रष्टाचार की लोलुप दृष्टि
कुछ भी तो नही मिटा पाया
सुस्त और बीमार लोकतत्र ।
नाजुक सा लोकतत्र
हर चुनाव के बाद
बेहोश हो जाता है
या कुभकर्णी निद्रा के
आगोश मे खो जाता है ।
आगामी चुनावो तक
राजनीति के मैदानो मे
बारम्बार लुटती है नैतिकता
सत्ता का स्नेह पाने को
कुछ भी कर गुजरते हैं नेता ।

अभिशप्त लोकतत्र
वेहाल मतदाता
फिर धकेल दिए जाते हैं
चुनावो की ओर ।

आत्मा की अवेहलना कर
पापियो मे से
छोटे पापियो को
तलाशना पड़ता है
चुनना पड़ता है ।

जनता के रोष के ज्वार मे
भ्रष्टाचार डूब सकता है
लोकतत्र उवर सकता है
किन्तु हमारे रक्त मे
आग नहीं जलती ।
हमारे हृदयो मे
निष्फल ही
धधकती है घृणा
यौवन का उत्साह भी
पहचानता नही अपनी डगर ।
सत्ता का व्यापार देखता है
अनुभव भी मौन रहकर ।
बुद्धिजीवी चर्चा करते हैं
चुनाव सुधार पर
किन्तु कुछ होता नही
सिसकता रहता है
राजनीति के पजो मे कैद लोकतत्र ।

सीटो की गणना मे है हमारी रुचि
मतदान के गिरते प्रतिशत के
कारणो को लेकर सोचते हैं हम ।
हमारी चिता खोखली चिता है
पाषाणवत् निस्पृहता से

व्यवस्था का सडापन

सृजन के यात्री

इतनी बड़ी दुनिया मे
क्या क्या पढ़ूँ ?
रजो गम विषाद
उदासी बेबसी अवसाद
क्या क्या समझूँ ?
फिर भी पढ़ता हूँ बहुत कुछ
और जो पढ़ता हूँ
उसके बारे मे सोचता रहता हूँ
उसे समझने की कोशिश मे
सवाल करता हूँ खुद से
खुद ही तलाशता हूँ
इन सवालो के उत्तर
सवाल कभी मुक्ति नहीं देते ।
समझ नही पाता
जीवन का सत्य
सबकुछ यहाँ उलझा हुआ है
मकड़जाल की तरह
ऐसा लगता है
यह सवाल मेरे निजी नही
सार्वजनिक हैं
शाश्वत हैं ।
इन शाश्वत प्रश्नो का
एक ही है उत्तर
व्यवस्था मे परिवर्तन ।
माँग करूँ किससे ?
कौन सुनेगा ?
समाज के कानो मे
भरा है

भ्रष्टाचार का पिघला हुआ सीसा ।
उदासीन हृदया में
आबद्ध है कोमल सवेदन
सुसुप्त है परिवर्तन की चाह ।
पर जागृत कैसे हो सकते हैं ?
भ्रष्टाचार के मखमली गद्दों पर
उदासीनता की निद्रा मे खोये,
निज स्वार्थों के स्वप्नों में आविष्ट
इस समाज के लोग ।

सृजन के यात्री

इतनी बड़ी दुनिया मे
क्या क्या पढ़ूँ ?
रजो गम विषाद
उदासी बेबसी अवसाद
क्या क्या समझूँ ?
फिर भी पढ़ता हूँ बहुत कुछ
और जो पढ़ता हूँ
उसके बारे मे सोचता रहता हूँ
उसे समझने की कोशिश मे
सवाल करता हूँ खुद से
खुद ही तलाशता हूँ
इन सवालो के उत्तर
सवाल कभी मुक्ति नही देते ।
समझ नही पाता
जीवन का सत्य
सबकुछ यहॉ उलझा हुआ है
मकड़जाल की तरह
ऐसा लगता है
यह सवाल मेरे निजी नही
सार्वजनिक हैं
शाश्वत है ।
इन शाश्वत प्रश्नो का
एक ही है उत्तर
व्यवस्था मे परिवर्तन ।
माँग करूँ किससे ?
कौन सुनेगा ?
समाज के कानो मे
भरा है

भ्रष्टाचार का पिघला हुआ सीसा।
उदासीन हृदयो मे
आबद्ध है कोमल सवेदन
सुसुप्त है परिवर्तन की चाह।
पर जागृत कैसे हो सकते हैं ?
भ्रष्टाचार के मखमली गद्दो पर
उदासीनता की निद्रा मे खोये,
निज स्वार्थो के स्वप्नो मे आविष्ट
इस समाज के लोग।

यूँ तो सक्षम है कला
कुभकर्णी निद्रा से जागृत करने मे
पर कला की बीहड़ राह
प्राय सुनसान रहती है
यहाँ भूले भटके ही
आता है कोई।
अपने अन्त स की आग मे
निरन्तर जलते रहकर भी
कलाकार रहता है
अनवरत सृजनरत।
निराशा और क्षोभ के बावजूद भी
कलाकार के मस्तिष्क मे
कीड़ो की तरह कुलबुलाते सवाल
यथार्थ से उगते हैं
पर यथार्थ अपरिवर्तित ही रहता है
और परिवर्तन की चाह मे
सुसुप्त सत्य को जागृत करने की
अमूर्त आकाक्षा के साथ
निरन्तर सृजनरत रहते हैं
सृजन के यात्री।

प्रदूषण

चिमनियो की कतारे,
गुस्से से बिफरे
धुएँ के काले बादल
जहरीली हवाएँ
नदियो का विषैला जल
अलघ्य दीवारो सा प्रदूषण ।
श्वासो के साथ
रक्त मे मिल रहा है
धुएँ का जहर
भौतिकता की निर्मम घृणा
के कारण हम नही देख पाते
प्रकृति की व्यथा
वृक्षो की याचना
मुत्यपाश मे आबद्ध जीव
और वनो का खोना ।

जीवनयात्रा के पथ पर
हम स्वय बिखेर रहे हैं कटक
अपने वशजो के लिए
छोड़े जाएँगे धुएँ से काले दिन ।
प्रभुता मे मदान्ध होकर हम
विकृत कर चुके है प्रकृति सतुलन
अपने ही पगो तले
हम बना रहे हैं श्मशान ।
वर्ष पर्यन्त अगारे उगलता है सूर्य
टेढ़े होने लगे हैं इन्द्र धनुष
बसत मे भी अब
उतने फूल नही खिलते ।
सिहरता है समुद्र सिहरते हैं उडगन
तबाही की ओर बढ़ रहे हैं हम ।

पर्यावरणीय प्रश्न

पर्यावरणीय प्रश्न
नही है प्रश्न प्रदूषण का
या मानवीय क्रियाओ के
नकारात्मक परिणामो का ।
यह प्रश्न है
प्राकृतिक जगत पर
समाज व पर्यावरण की
नियोजित अन्तर्क्रिया मे
परिवर्तन का ।
जैवमडल पर होने वाली
किसी भी वाह्य क्रिया से
(मानवकृत हस्तक्षेप भी)
उत्पन्न होता है
पर्यावरणीय असतुलन ।
और इसकी अनुक्रिया
होती है जैव जगत पर
स्पष्टत प्रतिक्षिप्त ।

जैवमडल की
स्वनियामक क्षमता भी
असहाय है
मनुष्य के विनाशक प्रभाव के समक्ष ।
पर्यावरणीय प्रश्न
असमाधेय भूमण्डलीय समस्या नही ।
बचा जा सकता है
पारिस्थितकी आत्महत्या से ।

सुनिश्चित करना होगा
प्रकृति मनुष्य अन्तर्क्रिया मे परिवर्तन ।
वैज्ञानिक दृष्टिकोण मे
मिश्रित करना होगा
पर्यावरणीय दृष्टिकोण ।
भौतिकवादी दृष्टिकोण मे
मानवतावादी प्रकृतिवादी दृष्टिकोण ।
प्रकृति सरक्षण एव
पर्यावरणीय सुरक्षा हेतु
हो प्रौद्योगिकी का विकास ।
भौतिक उत्पादन हो
प्राकृतिक व्यवस्था के अनुरूप ।
अपशिष्ट पदार्थो का
हो उचित निष्प्रभावन ।
पर्यावरणीय प्रश्न है वैश्विक प्रश्न
अत अपनाना होगा
पर्यावरण के प्रति
सर्वसमावेशी दृष्टिकोण ।
पर्यावरणीय प्रश्न का
एक ही है समाधान
अधाधुध विकास नही
टिकाऊ विकास ।
पर्यावरण सम्मत विकास ।

असावधानी का एक क्षण

असावधानी का एक क्षण
और एक जीवन का अन्त
सडक के ठण्डे पत्थर
न कोई प्रश्न न कोई उत्तर
बस अन्तिम सन्नाटा
और हवा मे कही तैरता
एक खामोश अफसोस ।

असावधानी का एक क्षण
और बिखर जाता है
अमरत्व का भ्रम
अनावृत्त हो जाता है सत्य
उमडती हुई जीवन की नदी
आकाशीय चेतना बन जाती है
सड़क पर शेष रह जाता है
गहन अवसाद मूक क्षोभ ।

असावधानी का एक क्षण
एक त्रासदी और
देती है हृदय को झकझोर
नि शब्द आवेग
नग्न सवेदनाएँ
उदास अहसास
रक्तिम सडक पर
शेष रह जाती है असमाप्त ग्लानि ।
असावधानी का एक क्षण

और क्षीण पड़ता हृदय का स्पदन
भावनाओ का मौन क्रन्दन
विडम्बना ही तो है
प्राणो का सड़क के इतिहास मे
सिमट जाना
सडक की मूक शून्यता मे खो जाना ।
झुलस गई है सड़क की आँखे
असावधानी के क्षण देखते देखते
हवा गाएगी सड़क की अनकही यत्रणा
सडक के दु ख का इतिहास
सावधानी न वरतने का दु ख ।
असावधानी के कितने क्षण और ?

अपने-अपने महाभारत

मृत्यु क्यो ? जीवन क्या है ?
ईश्वर कहाँ ? प्रमाण क्या है ?
अवसाद विडम्बनाएँ क्यो ?
मस्तिष्क मे घूर्णनरत रहते हैं
ग्रहो की भाँति प्रश्न ।
पर उत्तर नही मिलते
चहुँओर अतरिक्ष का अधकार है
व्यर्थ प्रतीत होती है, अपनी सोच
पर सोच से मुक्ति कहाँ ?
इन्ही शाश्वत प्रश्नो को ले
होती रहती है
मस्तिष्क मे उथल पुथल
ज्वालामुखी के गर्भ सी ।

अनिश्चय के द्वद्व मे
पूछता हूँ स्वय से
क्या चाहता हूँ ?
स्वय ही खारिज कर देता हूँ
सारे प्रश्न सारे दावे ।
जीवन के हर क्षेत्र मे
उभर आती हैं अपनी अपूर्णताएँ ।
निस्पृह अनासक्त सा
धैर्यपूर्ण आश्वस्ति से सुन लेता हूँ
हृदय विदारक क्षुब्धकारी विवरण
आशकित होता हूँ
क्या पूर्ण कर सकूँगा
मृत्यु से पूर्व अपना कार्य ?

आशकाओ की अशान्ति मे
आस्था और अनास्था के मध्य
पेंडुलम की भाँति दोलायमान सा
खो जाता हूँ
उन्ही शाश्वत प्रश्नो मे
अधकार म प्रकाश मे
कही भी मिलती नही
आत्मा को शाति !
अनवरत भटकता रहता हूँ
निरर्थक ही
प्रश्नो के गहन वन मे ।

सत्रास अवसाद पीड़ा
एक एक कर सबकुछ
अन्तर्ध्यान हो जाता है
रक्त प्रवाह मे ।
जिन्दगी के प्रति
सारी उदासी उकताहट
वोरियत और अकुलाहट
वदल जाती है
अजीब उन्मेष म ।
बोध नही रहता
स्व अस्तित्व का
अनुभूतियो की परिधि लाँघ
स्वीकार्य कर लेता हूँ नियति ।

मत्राविष्ट सा ताकता हूँ
आसमान की ओर
अदृश्य की चाह मे

पर अदृश्य दृश्य नही होता ।
विस्मृतियो की धुध से
पुन आकृतिबद्ध होने लगते हैं
जीवन के शाश्वत प्रश्न ।
सदेह, शका और सभ्रम के
महीन जाल मे छटपटाता हूँ
मुक्ति की चाह मे
सवकुछ बुरी तरह उलझ जाता है ।
मस्तिष्क से सवकुछ झटकने का
करता हूँ निष्फल सा प्रयत्न
यूँ भी हर प्रयत्न का परिणाम
सफलता नही होता ।
असफलता के भँवर मे
तलाशता हूँ सहारा कोई
पर कही किसी तिनके का भी
कोई सहारा नही ।
क्लान्त और एकाकी सा
मैं अनुभूत करता हूँ
भयानक ऊर्जाहीनता
चहुँओर निराशा का गहन अधकार ।
यकायक कौंधती है
एक हल्की सी किरण
प्रस्फुटित हो उठती है
अन्त स मे आत्मज्ञान की ज्योति
ऊर्जस्वित हो जाता हूँ
इस बोध से कि
अपने अपने महाभारत
सभी को स्वय लड़ने पड़ते हैं ।

स्वय मे ही लौट आता हूँ

जीवन के गली कूचो मे
बारम्बार भटककर
स्वय मैं ही लौट आता हूँ
उस केन्द्र की तलाश मे
जो प्रेरित करता है मुझे
सवेदन के शब्दन हेतु ।
सोचता हूँ
कैसा होता होगा
शब्द रहित जीवन ?
ठोस या अठोस
अभिव्यक्तन सवेदन का
है सृजन है जीवन ।
छदो के अभाव मे
कैसे मैं जी पाऊँगा ?
मेरी श्वास रचनाकर्म
मेरी रगो का रक्त सृजन
सृजनरहित जीवन तो
मैं नही जीना चाहूँगा ।

प्रश्नो के ढेर
और अछूती जिज्ञासाएँ
उलझा कर रखते हैं
मुझे हमेशा ही ।
कर्म की सार्थकता
अपने होने की आश्वस्ति
कोई सतुष्टि
जीवन के गली कूचो मे

जीवन

मर्यादाओ को
मूल्यो को
क्या महत्व दूँ ?
जीवन और यथार्थ के मध्य
कपायमान से डोलते हैं आदर्श
मानव की भाँति रहना
सर्वदा मर्यादाबद्ध हो रहना
यथार्थ मे सभव नही होता ।

जीवन अग्नि मे तप कर
खरा होता एक अनुभव है
अनुभवो की अग्नि मे
पुन रचित होते हैं सबध ।
आवश्यकता होती है
जीवन के हर मोड पर
आत्म सपन्नता की

आत्मशक्ति की
जीने के लिए
ध्रुव परिवर्तित करने पड़ते हैं
(जीवन के ध्रुव अटल नही होते)
अतीत की समयबद्धता को लाँघ
वर्तमान मे ही जीना होता है ।
मानस के आवेग भी
रूपाकार बदलते रहते हे
स्पष्टता पारदर्शिता ही
जीवन का सत्य नही
वास्तविकता की तपती धरती पर
पैर जलाने पड़ते है ।
छदम वेश अपनाने पड़ते हैं ।

निरन्तर समृद्ध करती रही है
कला और सृजन की राह ।
अकिंचन असहायता
सुसुप्त अन्धविश्वास
गुमसुम आवेग
इतिहास की विडम्बनाएँ
निरकुश प्रत्यावर्तन
मौन वेदना
सबकुछ गतिरत रहता है
कला और सृजन की राह पर ।
गहन अधकार से प्रकाश
एकात से शक्ति प्राप्त कर
युगो से सृजनरत हैं
काव्य यात्रा के सहयात्री ।
कोई रुद्ध नही कर पाता
कला और सृजन की राह ।

वायदे और सभावनाओ की
तलाश की अनन्तता भी
क्षीण नही कर पाती
मृत्यु के प्रति
उनका चिर अतृप्त प्रेम ।
कला और सृजन की यात्रा
सदैव से है एकात यात्रा
अतीत की धुध मे से
उभरती है
कई सार्थक चेहरो की

अकेली तलाश
आसमान से ऊपर जाने की ।
उन्हे पता नहीं
वहाँ सितारो के सिवा क्या है ?
शायद उन्हे है तलाश
उस सर्वोच्च शक्ति की
और वे जानते हैं कि
सत्य और प्रेम
दर्शन और अध्यात्म
के अतिरिक्त भी
एक राह और है
वहाँ पहुँचने की
कला और सृजन की राह ।

सब कुछ सुव्यवस्थित है

यौवन के मद मे चूर हूँ मैं
मेरे लिए खेल है जीवन
वायदे सभावनाएँ जिम्मेदारियाँ
मै किसी की परवाह क्यो करूँ ?
मृत्यु बीमारी और शोक के
अनुभव मुझे सताते है
पलती है हृदय मे आकाक्षा
समाज को परिवर्तित करने की
मगर कैसे होगा परिवर्तन
जानता नही ।
कभी कभी मेरे मानस मे
अवसाद भरती है स्थितियाँ
पर उबर जाता हूँ
जीवन के झझावातो से
सघर्ष है भविष्य
पर रुकने की इच्छा नही ।
सुनहरे बचपन की स्मृतियाँ
करती अब प्रताडित नही ।
घनिष्ठ पलो को रख दिया
सजाकर स्मृति कोष्ठो मे
उदास दिन अब उदास नही
राह मे जो कुछ मिलता है
समेट लाता हूँ
शायद सीख रहा हूँ जीना ।
मित्र गोष्ठियो मे
विमर्शित तमाम विषय
एकात मे उलझा देते हैं

पर निष्कर्ष तक पहुँच पाता नही
लक्ष्यहीन सा पाता हूँ
कभी स्वय को
फिर अन्त स से ऊर्जस्वित हो
लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ।
जानता हूँ
जीवन के महाकाव्य मे
सबकुछ सुव्यवस्थित है।

सार्त्र का अस्तित्ववाद

अस्तित्व की स्थापना के सघर्ष मे
बोध होता है अपनी अपूर्णता का
देश काल परिवेश और सबधी
कुछ भी तो मेरा चुनाव नही
फिर मैं स्वतन्त्र कहाँ ?
आत्मोन्मुख अह भी तो
सतुष्ट करता नहीं ।
वर्तमान के साथ सदैव रहता है
प्रेतछाया की भाँति अतीत ।
भविष्य की शाश्वत सभावना
समग्रता प्राप्ति हेतु व्याकुल चेतना
वहती है काल के प्रचण्ड प्रवाह मे ।

निस्सार बेतुका जीवन जीने के लिए
न जाने कहाँ फेक दिया गया है मुझे
एकाकी भटकता हूँ आधारहीन सा
स्वतन्त्रता की तलाश मे
पूर्णता की चाह मे
चेतना के शाश्वत अधेरे विवर मे
पत्थरो के मजबूत भवन मे
कैद पागल की भाँति ।
ब्लाटिंग पेपर की तरह
परिस्थितियाँ सोख लेती हैं
विवेक की स्याही ।

अपनी ही दृष्टि मे
असगत सी प्रतीत होती है

स्वतन्त्रता पूर्णता की तलाश
जीवन का इतिहास
हमेशा से
असफलता का इतिहास है
क्योकि आँकलन दृष्टि
सर्वदा सफलता सापेक्ष होती है ।
असफलता की परिणति है निराशा
निराशा ही नियति है जीवन की ।
प्रतिकूल शक्तियो की प्रबलता मे
क्षुद्र से परिणाम की प्राप्ति हेतु
वर्षो तक धैर्य रखना
निराशा मे भी
कर्म से विचलित न होना ।
भयानकतम यातनाओ और
क्रूरतम दण्ड मे भी जीते रहना ।
स्व से ब्राह्य से संघर्षरत रहते हुए भी
निरन्तर कर्मरत रहना
यही है सर्वोच्च लक्ष्य
कर्म और मानव स्वातत्र्य का ।

स्वप्नाविष्ट

बिखर जाते हैं समस्त भ्रम
कब तक भ्रमाविष्ट रहा जा सकता है ?
एक दिन भ्रम जगत से
बाहर आना ही पडता है ।
समय की पगडडियो पर
कब तक बचा जा सकता है
यथार्थ के कटको से ?
बचने के असफल प्रयत्न मे
उलझ जाता है जीवन
स्वप्न सदैव छलते है मन को
ये मायावी होते हैं
इनमे सत्य कहाँ ?
पर इस माया का बोध कहॉ हो पाता है ?
मनुष्य की नियति है
भ्रमो मे स्वप्नो से छले जाना ।
आयु के साथ
जब बोध होता है छले जाने का
तब होता है शोक ।
सत्य तो यह है
उम्र के अन्त मे
हम सभी को
करने होते हैं असख्य पश्चाताप
तो फिर शोक कैसा ?
और फिर क्या बुरा है
स्वप्नाविष्ट रहना ।

जीवन का विकास

सचित्र चिताएँ
विचारो के झँझावात
गधक की तरह
सुलगते पछतावे
मस्तिष्क के चक्रव्यूह
स्वप्नो से दिवास्वप्नो तक
छितरे हुए भयानक प्रश्नो से
हतोत्साहित मनोरथ
असतुष्ट आत्मा
उत्तर दिए बिना मुक्ति नही
पर लक्ष्यहीन सी
इस जीवनयात्रा मे
उत्तर भी कहॉ है ?
असहाय शिशु सा
भटकता भटकता
शब्दो की राह से
मौन के जगत मे
लीन हो जाता हूँ ।
आत्मकेन्द्रित हो
मौन बैठे रहकर भी
मुक्ति नही मिलती
पुन आना पडता है
शब्द जगत् मे
पर इस बार
एक निष्कर्ष साथ होता है
कि प्रश्नो का
सामना किए बिना
नही होता है
जीवन का विकास ।

पाप

अतीत मे धँस जाता है
हर विश्वासघात
समय के साथ
हर बुराई फीकी हो जाती है
विस्मृत कर दिए जाते हैं
समस्त पाप ।
क्या उदार समय
सभी के पापो को क्षमा कर देता है ?
लावे की भाँति उबलते पाप
ठडे कायफल पेड के पत्ते की भाँति
ठडे हो जाते हैं ।
कानो मे विलाप करते हैं प्रश्न
पर उनका उत्तर तलाशने की
न इच्छा है ना ही जिज्ञासा ।
समय का दुराग्रह
विवश कर देता है
सबकुछ सहते रहने को
पाप के सानिध्य मे
जीते रहने को ।
पाप कभी भस्मीभूत नही होता
सर्वदा लौट आता है
रहस्यमयी भयानकता से
हाँ हमारी नियति बन गया है
घोटालो के बीच रहना
और पाप के साथ जीना ।

सत्य

सत्य को दृष्टिगत करने का
व्यर्थ प्रयत्न किया मैंने
झुलस गई है दृष्टि
सत्य को नेत्रो से
दृष्टिगत नही किया जा सकता ।
सत्य कभी शाति से
नही जीने देता
धँस जाता है
चेतन व अवचेतन के मध्य
अपने सार्वजनिक स्वरूप से
तोड देता है सबकुछ
भले ही खुद भी टूट जाए ।

सत्य नही मानता
भ्रान्त विश्वास
और झूठा दिलासा
सत्य हॅसता है
मुरझायी हॅसी नही ।
चेतना एव स्मृतियो को
सवेदनाहीन कर देता है सत्य ।
सत्य को टाँगा नही जा सकता
किसी सलीव पर
सत्य को किसी पाश से
आवद्ध नही किया जा सकता ।
सत्य सभी को अनावृत कर देता है ।

विश्वास

साँझ की धुधली रोशनी म
महाशून्य के अधेरो मे
जिसे जहाँ जाना था चला गया
मैं तन्हा था तन्हा ही रह गया ।
युगो से युगो तक
अन्त स्वर सुनता हुआ
स्मृतियो मे डूबते उतराते
जीवन की अनजबी वीथियो मे
मैं भटकता ही रह गया ।
अखिल विश्व की
असख्य पीड़ाओ के मध्य
सर्वदा व्यथित था मैं
फिर भी मैंने व्यथा का
समाधान नही तलाशा
किसी अज्ञात स्वप्न की
मोहक मादकता मे खोया रह गया ।
बिश्वास विरासत है
मनु सन्तानो की
मनु सन्तानो ने
छुए हैं चाँद सितारे भी
मैं आत्मा की
अस्फुट गोपनीय भाषा सुनता रह गया ।
कौन कहता है सफर अधूरा है ।
समय है रास्ता है
और विश्वास भी तो बाकी रह गया ।

" तलाशता हूँ तुम्हें "

तलाशता हूँ तुम्हे

अनगिन युगो से
अनगिन शताब्दियो से,
अनगिन जन्मो से,
परछाइयो मे,
आकृतियो मे
मूर्तियो मे
अधेरी पीड़ा मे
ज्योतिर्मय आनन्द मे
शून्य मे
स्वप्नो मे
तलाशता हूँ तुम्हे।

न जाने कहाँ छिपे हो तुम ?
ओ मेरे परम सत्य !
आकाश के किसी कोने मे
श्मशान की मूक शून्यता मे
आवेग की अनबुझी अग्नि मे
या सागर की किसी लहर मे
सूर्यास्त की सुदूर सीमाओ पर
धुँधले दार्शनिक उजालो मे
शाम की हवा मे
लम्बी रातो मे
सपनो के बगीचो मे।

तलाशता हूँ तुम्हे
वेदो की ऋचाओ मे
बुद्ध के वचनो मे

उपनिषदो की सूक्तियो मे,
बाइबिल की प्रार्थनाओ मे
गीता के उपदेशो मे
कुरान की शिक्षाओ मे
सभी धर्मग्रन्थो मे
सभी नीतिशास्त्रा मे
धीर आश्वस्ति से ।

कानो मे गूँजती रही है
तुम्हारी पुकार
तुम्हारा हास्य
तुम्हारा जादू
तुम्हारी भाषा ।
चेतना की वाटिका मे
क्षणभगुर परछाई की भाँति
तुम्हारी अदभुत छवि
उभरकर लुप्त हो जाती है
ओ मेरे परम सत्य ।

अनन्त तलाश

तुम्हारी तलाश मे
पार कर चुका हूँ
न जाने कितने रेगिस्तान
सागर पर्वत और वन ?
न जाने किस दिशा मे
बढ़ता जा रहा हूँ ?
ऊर्जा का अनवरत् क्षय
और पुन सचय
क्या यही है मेरी नियति !
अनसुलझी गुत्थी
या अनन्त तलाश
क्या हो तुम ?

सोचा था
यात्रा की क्लान्ति
हर लेगी तुम्हारी मुस्कान
पर यह अधूरी तलाश
थकान को विषादमय कर गई ।
न जाने कब
मैं गहरी नीद सो गया था
और जब जागा तो देखा
सुनसान रेगिस्तान मे
मैं तन्हा हूँ ।

मोह शेष है

समीप है रेत की अनकही यत्रणा
बिखरे हैं हर ओर ककाल
पता नही किस मत्र से
निर्जीव सा हो गया हूँ
धूप की आग झुलसा रही है
प्राणान्तक तृष्णा
तलाश की आसक्ति
असमाप्त ग्लानि
अनन्त दिन
और क्षोभ कितने जन्मो का

उज्जवल आकाश सुनहरी झील
हरीतिमा का आश्वासन
बढ़ता हूँ किन्तु
यह तो मरीचिका है ।
भीतर ही भीतर रोता हूँ
स्वय को सात्वना देता हूँ
कुछ भी तो स्थायी नही
तुम्हारे सिवा ।
रेगिस्तान का अन्त तो होगा ही ।
हर दु स्वप्न समाप्त होता है ।

क्षोभ और दु ख से व्यथित हृदय
नेत्रो मे समाविष्ट
सैकड़ो जर्जर सकेत
आशा का टिमटिमाता दिया
सूर्यास्त के बाद फिर अधेरा

और मेरा अन्तहीन उदास सफर ।
जानता हूँ
कोई सर्वदा के लिए नही आता
इस रगीन जगत मे
फिर भी मोह शेष है
और जीने का
तुम्हे तलाशने का ।

कल्पनाओ मे
प्राय उकेरता हूँ
तुम्हारा अक्स ।
ब्रह्माण्ड की प्रत्येक व्यवस्था मे
अनुभूत करता हूँ तुम्हे ।
आत्मा की आँखो से
देखता हूँ
खेल रहे हो दूर तुम
दिंगत की हवाओ के साथ
धूप के साथ
तुम आषाढ़ के बादल से भी
ज्यादा सुन्दर लगते हो
पर तुम मेरे पास नही आते ।

मेरा दु ख

तुम्हारे अस्तित्व पर शका नही
अपनी क्षमताओ पर ही
सदेह होता है ।
अजीब बात है
समस्त सदेहो के बाद भी
आस्था खडित नही होती ।
तुम परिचित हो
मेरे दु ख से
तुममे एकाकार न हो पाने का दु ख ।

ओ मेरे परम सत्य !
तुम मेरे पास कही हो
कदाचित मेरे ही अन्त स मे ।
इतना ही जाना है
तुम हो तमाम यत्रणाओ और
स्वप्नो का एकीभूत रूप
सारे जन्मो मरणो का एकात्म अनुभव
पहचान सकता हूँ
तुम्हारे सारे निशान
अनुभूत करता हूँ
तुम्हारा स्नेह और आश्वासन ।

मेरा रास्ता हमेशा से अकेले का रास्ता है

मेरा रास्ता
हमेशा से अकेले का रास्ता है
रगो का झूठा जादू
मुझे विचलित नही कर पाता ।
लोग आते हैं इस राह पर भी
किन्तु साथ नही दे पाते
दिन की परछाइयो की तरह
रात के अधेरो मे
सभी गुम हो जाते है ।
इस घोर अकेलेपन मे
अनुभूत करता हूँ
मौन सकेतो से बुलाते हो तुम ।

इतिहास के अनभूले प्रेतो मे
अभिशप्त धरती की छायाओ मे
मनुष्य पर जमे अधकार को
अपने नाखूनो से
परत दर परत चीरते हुए
तलाशता हूँ तुम्हे ।
तुम्हे पाकर ।
किसी कमजोर प्रेमी की भाँति
विकल हो उठता हूँ ।
घायल टूटे पैरो से
ग्रीष्म की गले मे काँटे वोनी
प्रखर तृष्णा के साथ

रात की भयानक व्याकुलता मे
राह का श्रम स्मृतियो मे कौंधते ही
क्लान्ति महसूस होने लगती है
मुँदने लगते है नेत्र ।
झिलमिलाती चेतना के नगर
उभरने लगते हैं स्वप्नो मे
अदभुत शाति
ज्योतिर्मय का सिहासन
जादूगर की तरह

रग बदलता आकाश
महाशून्य का सगीत
हृदय की नदी के गर्भ तक
पहुँच गया हूँ मै
कितना समीप हो तुम ?
यकायक उजाले की तीखी चौध
रेगिस्तान का द्वेष अनुभूत करते ही
खुल जाते है नेत्र
अकेले भयानक पल ।
निद्रा कितनी अच्छी होती है
स्वप्नो के टूटे किवाडो से
तुम आ जाते हो !

सारी तलाश तिरोहित हो जाती है

ऐन्द्रजालिक माया मे
उजाले के अमूर्त्त नगरो मे
तुम्हारी तलाश करते समय
मेरा ही मन लड़ रहा था मुझसे
इस निरर्थक खोज का लाभ क्या ?
मस्तिष्क मे उठ रहे थे झझावात
रक्त की धारा वन गई थी आग
हिम हो जम चुकी थी चाह
नेत्र सुन रहे थे और ज्यादा
तब मैं अन्यमनस्कता से सोच रहा था
मन से सधि करने के विषय मे
अचानक मैं चौंक गया
दूर क्षितिज की धुँधली रेखा पर
तुम ही थे ।
मैं आँकता रह गया
वह नवीन रहस्य ।
सारी तलाश तिरोहित हो जाती है
रहस्य शून्य मे
जीवन की नव उमग जागृत होती है
निरन्तर स्पन्दित होता हूँ
तुम्हारी ऊर्जा से ।

नव मनुष्य

अथाह जल राशि मे
प्रकाश पुज की भॉति प्रतिबिम्बित
धरा और अम्बर के
साम्राज्यो मे प्रतिष्ठित
मनुष्यो के पूजन से
पोषित और सवर्धित
इस विराट ब्रह्माण्ड मे
सबकुछ तुम्हारी दिव्य गध से परिवेशित
घनिष्ठ सम्पर्क मे हो तुम
फिर भी अदृश्य ।

आस्था तर्को से ऊपर होती है
ओ मेरे परम सत्य !
तुम मुक्ति का वह द्वीप हो
जिसे सदियो से
मनुज खोजता रहा है ।
कभी तुमको
मेरे ही एक पूर्वज के तीर ने
मुक्ति दी थी
और आज मुझे है तलाश
मुक्ति की ।

समस्त प्रयत्नो के उपरान्त भी
समाप्त नही होते
जगत के दु ख
क्या मनुज की नियति है दु ख ?
क्या वैषम्य शाश्वत है ?

या मनुज की यात्रा
अपूर्णता से पूर्णत्व की यात्रा है ।
नि सदेह गढ़ोगे तुम
नव मनुष्य
समस्त पवित्र एव दैवीय अनुभूतियो से
युक्त मनुष्य ।

अनुभूति

दीर्घ होती जाती है तलाश
अल्प होता जाता है जीवन ।
फिर भी दृढ़ है विश्वास
नदी पहुँचती है सागर तक
मैं भी पहुँचूँगा तुम तक
ओ मेरे परम सत्य !
अति न्यून सकोच के साथ
स्वीकार करता हूँ
तुम मिलो न मिलो
तलाशता ही रहूँगा ।

मेरी आस्था ही
तुम्हारे अस्तित्व का प्रमाण है ।
सर्वदा ही पुष्पो के रग मे
प्रकृति के ऐन्द्रजालिक सौन्दर्य मे
वालको की अवोधता मे
सुख दु ख मे
प्रेम मे सत्य मे
आनन्द मे पीडा मे
समाहित हो तुम ।
अब हुआ है बोध
तुम दिव्य अनुभूति हो ।

अनुभूतियो मे साकार हो उठता है
तुम्हारा दिव्य मनोहारी रूप
उस क्षण अन्त हो जाता है
समस्त आकाक्षाओ का ।

तुम्हे तलाशता था
और तुम पीड़ा और सौन्दर्य के मध्य
हर पल मेरे निकट थे
इस स्वर्गिक आलोक म
सारे पाप सारे पश्चाताप धुल गए ।
धूप की तरह तुम अनुभूति हो
ओ मेरे परम सत्य ।